MUMBAI COIN SOCIETY
लालच का सिक्का...
धोखाधड़ी का खेल”
सच्चाई जानें
FAKE
SCAM
बचें झूठे वादों से
कीमत:- ₹58 लाख दूंगा

प्रस्तावना

जहाँ लालच बढ़ता है, वहीं धोखाधड़ी भी पनपती है।

☞ इंटरनेट और सोशल मीडिया पर रोज़ाना आपको ऐसे वीडियो मिलते हैं जिनमें कहा जाता है कि पुराने चलन के सिक्के या नोट लाखों करोड़ों का बिक सकता है, हम आपको पैसे दिलवाएंगे

☞ गरीब और आम लोग इस झूठे लालच में फँसते हैं और अपनी खून पसीने की कमाई लुटा देते हैं

☞ हमारा ये उद्देश्य है: आम लोगो में जागरूकता बढ़ाके धोखाधड़ी (ठगने) से बचाना।

धोखाधड़ी कैसे फैलती है?

- यूट्यूब पर आकर्षक विज्ञापन (थंबनेल): “5 रुपये का सिक्का = 5 लाख रुपये”
- क्लिकबेट शीर्षक: “आपके घर का नोट आपको बना देगा करोड़पति”
- एक नंबर दिया जाता है और उसपे संपर्क करने के लिए कहते हैं
- लोग वीडियो देखकर फोन करते हैं
- **रजिस्ट्रेशन फीस का बहाना**
- धोखेबाज़ कहते हैं कि सिक्का बेचने से पहले आपको रजिस्ट्रेशन करवाना पड़ेगा।
- इसके लिए वे ₹500 से लेकर कोइ भी कीमत जो आपसे लूट सके वो माँगते हैं।
- **प्रोसेसिंग/ट्रांज़ैक्शन चार्ज**
- कई बार वे कहते हैं कि “बैंक ट्रांसफर करने के लिए प्रोसेसिंग चार्ज देना होगा।”
- असल में यह सिर्फ बहाना है, पैसा लेने के बाद वे नंबर बदल देते हैं अथवा कोई जवाब नहीं मिलता
- **आईडी वेरिफिकेशन शुल्क**
- वे दावा करते हैं कि “RBI या सरकार आपके सिक्के खरीदने से पहले आईडी वेरीफाई करती है” और इसके लिए शुल्क माँगते हैं।
- यह पूरी तरह झूठ है। RBI कभी भी ऐसा नहीं करती।

RBI अपने बनाये हुए सिक्के और नोट आप से ऊँचे दाम पे क्यूँ खरीद लेगी?

धोखाधड़ी कैसे फैलती है?

डिलीवरी चार्ज/टोकन अमाउंट

- कुछ ठग यह कहते हैं कि "हम आपका सिक्का खरीद लेंगे, पहले ₹2000 टोकन अमाउंट दो, फिर पूरा पेमेंट देंगे।"
- पैसा मिलते ही वे गायब हो जाते हैं।

नकली RBI लेटर

- इंटरनेट/व्हाट्सऐप पर फर्जी RBI लेटर बनाकर शेयर करते हैं।
- उसमें लिखा होता है कि "आपके पास अगर ₹5 का पुराने चलन के सिक्का या नोट है तो RBI इसे ₹5 लाख में खरीदेगी।"
- लेटर पर नकली मुहर और हस्ताक्षर भी डाल दिए जाते हैं ताकि लोग विश्वास करें।

असलियत क्या है?

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने कई बार सार्वजनिक रूप से कहा है कि:
- RBI किसी भी सिक्के या नोट को सामान्य जनता से खरीदती नहीं है।
- RBI ने कभी भी ऐसा कोई लेटर जारी नहीं किया है।
- ऐसे कई पैतरे धोकेबाज इस्तेमाल करते हैं और लोगों से पैसा निकलते हैं
- पैसा तो चला जाता है, पर सिक्का/नोट कभी नहीं बिकता।
- सच्चाई यह है कि पुराने चलन के सिक्के या नोट का असली मूल्य केवल संग्राहक ही तय करते हैं – न कि यूट्यूब अथवा सोशल मिडिया वाले धोखेबाज़।

छोटे मूल्य के सिक्कों की हकीकत

5 पैसे, 10 पैसे, 20 पैसे, 25 पैसे (गेंदा वाला) ये सिक्के भारत सरकार ने बहुत बड़ी संख्या में बनाए थे।

₹1 और ₹2 के सिक्के

- **बाजार में खूब चलते थे और करोड़ों की संख्या में ढाले गए थे।**
- **इनका भी कोई असामान्य मूल्य नहीं है।**

आज ये केवल संग्रह (कलेक्शन) की दृष्टि से कुछ रुपये से लेकर कुछ सौ रुपये तक मिल सकते हैं, लाखों का मूल्य इनमें नहीं है।

विशेष सिक्के, नोट और गुमराह करने वाले दावे

आज़ादी का अमृत महोत्सव सिक्के (₹1, ₹2, ₹5 और ₹10)

- भारत सरकार ने आजादी का अमृत महोत्सव (75 वर्ष की आज़ादी के अवसर पर) विशेष डिज़ाइन वाले सामान्य चलन के सिक्के जारी किए।
- ये सिक्के सामान्य चलन में आते हैं और RBI द्वारा वैध मुद्रा (Legal Tender) हैं।
- इन पर राष्ट्रीय प्रतीक और "आज़ादी का अमृत महोत्सव" का लोगो अंकित है।
- ऐसे सिक्के भी करोड़ों के दाम पर नहीं बिकते।
- इनका मूल्य वही है जो उन पर अंकित है – यानी ₹1 का सिक्का ₹1 ही रहेगा, ₹10 का सिक्का ₹10 ही रहेगा।
- हाँ, इन्हें संग्राहक भविष्य में संग्रह के तौर पर रख सकते हैं, लेकिन किसी "चमत्कारी" कीमत की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

₹5 माता वैष्णोदेवी सिक्का (2012 में जारी)

- यह सिक्का श्रद्धालुओं के लिए जारी किया गया था।
- इसकी असली कीमत केवल नाममात्र से अधिक है, कोई लाखों रुपये नहीं।

विशेष सिक्के, नोट और गुमराह करने वाले दावे

₹5 ट्रैक्टर वाला नोट – सच्चाई

- यह नोट भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने 1970 और 1980 के दशक में छापा था।
- इसके पीछे की साइड (Reverse) पर कृषि का दृश्य और ट्रैक्टर छपा हुआ है।
- यह उस दौर की प्रगति और हरित क्रांति का प्रतीक था।
- संग्राहकों के बीच यह नोट ₹50 से ₹200 (स्थिति, सीरियल नंबर, और वर्ष पर निर्भर) तक का हो सकता है।
- लेकिन सोशल मीडिया पर जैसे बताया जाता है कि यह "₹5 का नोट = ₹5 लाख", यह पूरी तरह झूठ और धोखाधड़ी है।

ये आम चलन के सिक्के और नोट रोजाना के लेनदेन के लिए छापे हुए हैं। संग्रह करने लायक कीमती नहीं है।

काल्पनिक और फर्जी सिक्के / नोट

सोशल मिडिया पे कुछ ऐसे सिक्के और नोट के व्हिडिओ और फोटो वायरल हो रहे हैं जो पूर्णता काल्पनिक है और फर्जी है ऐसे सिक्के और नोट कभीभी बने ही नहीं उसको बहुत क़ीमती बतातें हैं

Original

Fake

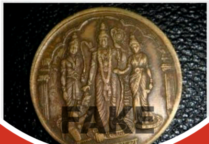

सही जानकारी और किताबें

☑ प्राचीन सिक्के और नोट भारत के स्वर्णिम इतिहास का प्रतिक है

☑ ये भारत के हजारो साल पुरानी संस्कृति को दर्शाती है

☑ इतिहास में रुची रखनेवाले सिक्कों का संग्रह करते हैं, इन पर शोध करके क़िताब भी प्रकाशित करते हैं और PhD भी करते हैं।

☑ प्राचीन सिक्कोंकी सही जानकारी पाने के लिए और इन के संग्रह की शुरुवात के लिए आप परमेश्वरी लाल गुप्ताजी कि "कॉइन्स" किताब से शुरुवात कर सकते हैं

☑ भारतीय नोटों कि सही जानकारी और संग्रह के लिए आप किशोर झुंझुनवाला कि "इंडियन पेपर मनी" की किताब से शुरुवात कर सकते है।

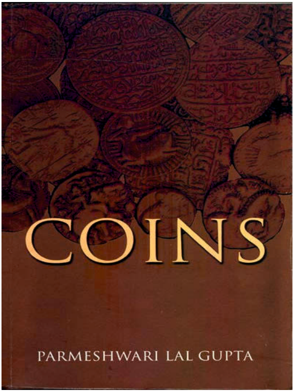

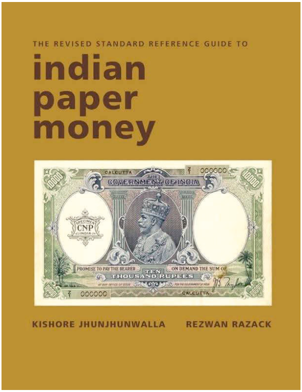

सावधानियाँ

- ☑ RBI और भारत सरकार जनता से सिक्के/नोट खरीदती नहीं है।
- ☑ किसी भी व्यक्ति/वीडियो पर विश्वास न करें जो आपसे पैसे माँगे।
- ☑ असली जानकारी सिर्फ आपके नज़दीकी न्यूमिस्मैटिक सोसाइटीज़ से ही मिलती है।

निष्कर्ष

- ☑ "जहाँ लालच बढ़ेगा, वहाँ धोखाधड़ी बढ़ेगी।"
- ☑ सोशल मीडिया पर फैलती गुमराह करने वाली जानकारी से बचें।
- ☑ अपने सिक्के और नोट को ज्ञान और शौक की नज़र से देखें, करोड़ों की उम्मीद से नहीं।
- ☑ यही समझदारी आपको ठगी से बचा सकती है।

हनुमान छाप सिक्के से अमीर बनाने का लालच देकर बुलाया, 5 दबोचे गये

{ कार्रवाई } पचेड़ा के जंगल में सिक्के खरीदने राशि लेकर प्रार्थी को बुलाया था

मंदिर हसौद के 2, महासमुंद के 2 तथा ओड़िशा का 1 युवक पकड़ाया

● नवभारत ब्यूरो ◆ महासमुंद.
www.navbharat.org

तांबे के हनुमान छाप प्राचीन सिक्के का प्रभाव से रातों रात अमीर बनाने का प्रलोभन देकर हठी करने वाले अंतरराज्यीय ठग गिरोह को पुलिस ने कल ग्राम पचेड़ा के समीप जामली रोड जंगल में दबोचा. वहां उन्होंने प्रार्थी को सिक्के खरीदने के लिए राशि लेकर बुलाया था. लेकिन, वहां पुलिस पहुंच गई. पांचों को गिरफ्तार कर न्यायालय से जेल भेजा गया.

नवपदस्थ पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल ने पुलिस कंट्रोल रुम में मामले की जानकारी देते हुये बताया कि 6 जुलाई को इमलीभाठा निवासी प्रार्थी ने शिकायत की थी जिसमें बताया था कि ओड़िसा निवासी सुरेश दुरिया, विष्णु चंद्राकर, टीकम ठाकुर व अन्य दो कुल 5 लोगों

1818 में निर्मित सिक्का आधा आना का

बताया गया है कि 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में निर्मित तांबे का यह सिक्का आधा आना का है. जब्त एक सिक्के पर हनुमान तथा दूसरे पर राम-जानकी का चित्र अंकित है. दोनों सिक्कों के दूसरे पहलू पर अंग्रेजी में हाफ आना लिखा हुआ है. इन सिक्कों को चमत्कारी बताकर लोगों से ठगी के अनेक मामले उजाकर हो चुके है. इस गोरख धंधे से जुड़े लोगों को ऐसे सिक्कों की तलाश रहती है. यह लाखों में बिकता है.

कार्रवाई में ये रही शामिल

यह सम्पूर्ण कार्रवाई पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल के मार्गदर्शन में अति. पुलिस अधीक्षक श्रीमती मेघा टेम्बुलकर साहू एवं अनु. अधिकारी पु. नारद सूर्यवंशी के निर्देशन में थाना प्रभारी खल्लारी विनोद नेताम, सायबर सेल प्रभारी उनि संजय सिंह राजपूत, प्र.आर. मिनेश ध्रुव, प्रकाश नंद, श्रवण कुमार दास, प्रवीण शुक्ला, आर. चम्पलेश सिंह ठाकुर, पियुष शर्मा, कामता आवड़े, शुभम पांडे, अजय जांगड़े, रवि यादव, लालाराम कुर्रे द्वारा की गई.

सिक्कों और नोटों के डिजाइन उस समय के सामाजिक मुद्दों पर आधारित थे, इसलिए 5 रुपये का नोट एक नए डिजाइन के साथ आया और इसलिए इस डिजाइन को बंद कर दिया गया। यह नोट कानूनी निविदा के रूप में जारी है, लेकिन प्रचलन में उतना नहीं देखा जाता है, लेकिन यह इसे दुर्लभ नहीं बनाता है या इसका मूल्य इसके अंकित मूल्य से अधिक नहीं है।

BOMBAY 1770 15 RUP.S

MUMBAI COIN SOCIETY

Regn No. F37374/MUM 2009

मुंबई कॉइन सोसायटी की ओर से
जनहित में जारी